भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए 16 से 22 जून 2025 तक तिसरी साप्ताहिक सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)						अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		जून						जून				
		11	12	13	14	15	16	18	19	20	21	22
	हिसार	0	0	0	0	0	0	30	3	0.4	1.2	3.9
	जींद								4	0.9	3.4	1.5
	सिरसा								0.9	0.3	0.2	1.7
	रोहतक								7.5	1.4	4.8	2.1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल 42 से 49 दिन पुरानी है और शुरुआती वानस्पतिक वृद्धि से लेकर फूल आने के चरण में है। विरलन, निराई और हाथ से जोताई की गई। अहवाल अवधि के दौरान अच्छी बारिश हुई। खेतों में मोथा, सांठी और मकड़ा जैसी घास फैल गई हैं। थ्रिप्स, सफेद मक्खी और तेला की प्रारंभिक संख्या देखी गई, लेकिन यह आर्थिक सीमा स्तर से काफी नीचे थीं। फूलों में गुलाबी सुंडी का संक्रमण पाया गया है। बारिश से पहले उच्च तापमान के कारण कपास के पौधों का जलना देखा गया। कुछ खेतों में जड़ों का सड़ना भी देखा गया।

सिरसा में, फसल 55 दिन पुरानी है और वनस्पतिक वृद्धि के चरण में है। अंतराल भरना, विरलन, शुरुआती बोई गई फसल में पहली सिंचाई, और हाथ से जोताई/ ट्रैक्टर से या बैल और ऊंट द्वारा जोताई/ अंतःसांस्कृतिक कार्य जारी हैं। कुछ स्थानों पर घास उगी है। कुछ खेतों में तनावपूर्ण फूलन और तेला का संक्रमण देखा गया।

सलाह :

हिसार में, किसानों को वर्षा के बाद अतिरिक्त पानी निकालने की सलाह दी जाती है। 7 हफ्ते से अधिक पुराने फसल में वर्षा या पहली सिंचाई के बाद एक बैग यूरिया डालें और वर्षा समाप्त होने के बाद उपयुक्त अवस्था में खुरपी या कसोला से हाथ से खुदाई करें। चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक सीमा स्तर से नीचे है, इसलिए रासायनिक कीटनाशकों का छिड़काव करने की आवश्यकता नहीं है। 35-40 दिन पुरानी फसल में गुलाबी सुंडी फेरोमोन ट्रैप @ 2/एकड़ लगाएं और हर 3 दिन के अंतराल पर सुंडी पतंग की संख्या दर्ज करें। पिछले मौसम के कपास के पौधों के डंठल को कपास के खेतों के पास ढककर सुखी पत्तियों और ठीक से नहीं खुली/अधूरी बॉल्स को नष्ट करें। गुलाबी सुंडी के संक्रमण की जाँच के लिए कम से कम 100 फूलों का निरीक्षण करें। जड़ सडन प्रभावित क्षेत्रों में प्रभावित पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 WP @ 2 ग्राम/लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा विरिडी या ट्राइकोडर्मा हार्ज़ियानम @10 ग्राम/लीटर पानी से उपचार करें।

सिरसा में, किसानों को सुझाव दिया जाता है कि यदि फसल की उम्र 40-50 दिन हो गई है, तो खेत की सिंचाई करें और सिंचाई या बारिश के बाद यूरिया की पहली विभाजित किस्त का उपयोग करें। हाथ से जोताई के लिए कसोला / खुरपा का उपयोग करें या ट्रैक्टर / बैल / ऊंट से चलने वाली त्रिफली से अंतःसांस्कृतिक कार्य करें ताकि फसल को घास मुक्त रखा जा सके। वैकल्पिक रूप से, वार्षिक घास और चौड़ी पत्तियों वाली घास को नियंत्रित करने के लिए 6% पायरिथियोबाक सोडियम + 4% क्विज़ालोफोप एथिल @1,250 मि.ली./हे. छिडकाव करें या पैराक्वाट @1,250 मि.ली./हे. या ग्लूफोसिनेट अमोनियम @2,250 मि.ली./हे. को 200-250 लीटर पानी/एकड़ में निर्देशित छिडकाव (रक्षात्मक हुड का उपयोग करते हुए) के रूप में छिडकाव करें ताकि फसल की पंक्तियों के बीच घास को नियंत्रित किया जा सके। यदि चूसने वाले कीटों या सुंडी का संक्रमण आर्थिक सीमा स्तर के ऊपर या करीब बोने के 60 दिन बाद तक दिखाई दे, तो केवल नीम का तेल या नीम आधारित कीटनाशक @1.0 लीटर/एकड़ 150 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। फेरोमोन ट्रैप्स स्थापित करें और नियमित अंतराल पर बोने के 60 दिन बाद तक रोसेट फूलों की निगरानी करें ताकि गुलाबी सुंडी के संक्रमण का पता चल सके। जड़ों के सड़ने को नियंत्रित करने के लिए, कार्बेन्डाजिम @2.0 ग्राम/लीटर या ट्राइकोडर्मा spp.@ 10 ग्राम/लीटर पानी से जड़ क्षेत्र को डुबोकर उपचार करें।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)						अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		जून						जून				
		11	12	13	14	15	16	18	19	20	21	22
	अजमेर								11	12	8.8	8
	जोधपुर	0	0	0	0	0	18.7	0	1.5	0.3	1.1	1.3
	नागौर								2.5	1.7	3.2	2.9
	पाली								12	1.1	3.1	3.4
	श्रीगंगानगर								0.3	0.1	0.1	0.1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, फसल 22 से 47 दिन कि है और पौध/वानस्पतिक स्थिति के चरण में है। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ दोनों हि जिलों से सिंचाई नहर के पानी के देर से छोड़े जाने के कारण बोवाई में देरी की रिपोर्ट मिली है। बोवाई के बाद कुछ स्थानों पर सिंचाई की गई है; हाथ से जोताई/निराई और अंतःसांस्कृतिक कार्य जारी हैं। फसल में इटसिट (Trianthema spp.), तंडला (Digera arvensis) और मोथा (Cyperus rotundus) जैसे खरपतवार दिखाई दिए है । तेला का संक्रमण 0 से 1.00/3 पत्तियों, सफेद मक्खी 0 से 4/3 पत्तियों और थ्रिप्स 0 से 8/3 पत्तियों में देखा गया है।

सलाह:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अधिकतम उर्वरक उपयोग दक्षता के लिए पहली सिंचाई के बाद नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों की सिफारिश की गई मात्रा का उपयोग करें। सिंचाई से पहले नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का छिड़काव करने से बचें, क्योंकि इससे उर्वरक का जमीन में रिसाव होता है। कपास के खेतों के पास और आसपास खरपतवार को निकाले । फसल की नियमित रूप से कीटों और रोगों के लिए निगरानी करें। रस चूसने वाले कीटों और गुलाबी सुंडी को नियंत्रित करने के लिए नीम आधारित कीटनाशकों का @ 5 मि.ली./लीटर पानी में छिडकाव करे।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)						अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		जून						जून				
		11	12	13	14	15	16	18	19	20	21	22
	खरगाँव	0	1	0	5	10	6	7	5.5	10	3.1	1.8
	धार								19	7.7	5.8	4.5
	खांडवा											
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, खेत की तैयारी चल रही है। जो किसान पूरी तरह से मानसूनी बारिश पर निर्भर हैं, वे मानसून की बारिश का इंतजार कर रहे हैं या पिछले दिनों हुई प्री-मानसूनी बारिश के बाद बोवाई शुरू कर चुके हैं।

सलाह:

कपास की फसल की प्री-सीज़न (मौसम से पहले) बोवाई करने से परहेज करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे केवल जल्दी से मध्यम अवधि में पकने वाली गैर-बीटी किस्मों या बीटी हाइब्रिड कपास की ही खेती करें। उन खेतों में कपास की बोवाई न करें, जहां पिछले वर्ष भी कपास की फसल ली गई थी।

मौसम के बाद और बुवाई से पहले की प्रथाओं का पैकेज

1. पिछले फसल मौसम के बचे हुए डंठलों और आंशिक रूप से खुले हुए बीजकोषों को खेतों से साफ करें। उखाड़े गए कपास के डंठलों को खेत की मेड़ों पर न रखें। फसल के मौसम के अंत में, पिछली पीढ़ी के गुलाबी सुंडी लार्वा फसल के अवशेषों जैसे कि संक्रमित बॉल्स, डंठल या मिट्टी में सुसुप्तअवस्था/हाइबरनेशन में प्रवेश करते हैं।इसलिए, गुलाबी सुंडी के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए ऐसे संक्रमित अवशेषों को तुरंत नष्ट कर देनाचाहिए। अवशेषों के नष्ट होने से जीवाणु पत्ती झुलसा, जड़ सड़न और फंगल पत्ती धब्बे जैसी बीमारियों से नए कपास की फसल के इनोकुलम और संक्रमण को कम करने में भी मदद मिलेगी।

2. फसलकाल के बाद कीट या आत्मघाती पतंगे, यदि कोई हों, को फंसाने के लिए मार्केट यार्ड और जिनिंग मिलों के परिसर में 20 मीटर की दूरी पर कम से कम 10 फेरोमोन ट्रेप/जाल स्थापित करें।. फेरोमोन जाल में लूर समय पर बदलें। क्षतिग्रस्त बीजों से निकलने वाले लार्वा को भी मार दे। इससे जिनिंग या मार्केट यार्ड परिसर से आस-पास के खेतों तक गुलाबी सुंडी के संक्रमण को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।

3. कपास की फसल की मानसून पूर्व बुआई से बचें। जल्दी बोई गई फसल में स्क्वेरऔर फूल जैसी प्रजनन संरचनाएं जल्दी आ जाती हैं। पिछले सीज़न की सुसुप्तअवस्था से निकलने वाले गुलाबी सुंडी इन स्क्वेर और फूलों पर अंडे देते हैं, इसप्रकार जल्दी बोई गई फसल नए सीज़न में गुलाबी सुंडी की पहली पीढ़ी को पूरा करने में मदद करती है। यदि समय पर नियंत्रित नहीं किया गया, तो इस आबादी की अगली पीढ़ियां समय पर बोई गई कपास की फसल के स्क्वेर, फूल और बीजकोषों की लगने के साथ फैलती हैं।

4. गर्मियों में गहरी जुताई करने से अप्रैल-मई में सूरज की चिलचिलाती गर्मी के कारण मिट्टी में छिपे सुप्त लार्वा और प्यूपा को बाहर निकालने और मारने में मदद मिलती है। इसके अलावा, जुते हुए खेतों का अनुसरण करने वाले पक्षी, कीड़ों के इन जीवन चरणों का शिकार करते हैं। इससे आने वाले मौसम की कपास की फसल पर गुलाबी सुंडी, पत्ती खाने वाले कैटरपिलर जैसे कीटों और विल्ट, जड़ सड़न और नेमाटोड जैसी मिट्टी जनित बीमारियों को कम करने में मदद मिलती है।
5. गुलाबी सुंडी के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए पिछले सीज़न के दौरान जिन खेतों में पिंक सुंडी का अत्यधिक प्रकोप था, वहां फसल चक्र अपनाना चाहिए। कपास गुलाबी सुंडी का एकमात्र भोजन स्त्रोत है, इसलिए फसल चक्र इस कीट के जीवन चक्र को तोड़ने में मदद करता है। रोगग्रस्त खेतों में मृदा जनित रोगों और सूत्रकृमि के संक्रमण को रोकने में फसल चक्र बहुत प्रभावी है।

6. कपास की रस चूसने वाली कीट और रोग प्रतिरोधी, कम अवधि वाली और जल्दी पकने वाली किस्में/संकर/किस्में उगाएं। इससे फसल के शुरुआती विकास चरण के दौरान रस चूसने वाले कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों के अवांछित छिड़काव से बचने में मदद मिलती है। गुलाबी बॉलवर्म का संक्रमण मध्य सीज़न से शुरू होता है और सीज़न के अंत तक लगातार बढ़ता है। इसलिए, कम अवधि और जल्दी पकने वाली किस्में देर के मौसम में गुलाबी सुंडी के संक्रमण से बचने में मदद करती हैं।

7. कपास की फसल की बुआई जून माह में 80-100 मिमी मानसूनी वर्षा होने पर ही करनी चाहिए। उचित अंकुरण और फसल की उचित संख्या सुनिश्चित करने के लिए, प्रारंभिक अंकुर चरण के दौरान लंबे समय तक शुष्क अवधि का सामना करने के लिए, मिट्टी में इष्टतम नमी होनी चाहिए। इससे वर्षा के लंबे समय तक शुष्क रहने के कारण दोबारा बुआई से बचने में भी मदद मिलती है। जून में समय पर बुआई करने से गुलाबी सुंडी के शुरुआती संक्रमण से बचने में मदद मिलती है।

8. गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) रणनीति के कार्यान्वयन के संबंध में कपास किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। दुकानदारों को यह भी सलाह दी जा सकती है कि वे किसानों को प्री-मानसून बुआई न करने के लिए सूचित करें। इससे किसानों तक सही संदेश अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने में मदद मिलेगी।

The detailed information regarding cotton production technology, e.g. selection of soil, varieties, fertilizer application, sowing methods, irrigation systems, management of weeds, insect pests and diseases, etc. can be availed from an android based **CICR Cotton App** developed by ICAR-CICR, Nagpur. The app can be downloaded free of cost from Google play store. Additionally, the crop growth stage specific and weather based weekly advisory are uploaded on the website of ICAR-CICR (https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory) also to be consulted for the benefit of farmers.